AMOGHVARTA

ISSN : 2583-3189

खोरठा भाषा की प्रयोगात्मक ध्वनियों का विवेचन

ORIGINAL ARTICLE

Author
सर्वजीत कुमार
शोधार्थी, हिंदी विभाग
विनोबा भावे विश्वविद्यालय
हजारीबाग, झारखंड, भारत

शोध सार

खोरठा भाषा झारखंड क्षेत्र की एक प्रमुख लोकभाषा है, जो मुख्यतः झारखंड में बोली जाती है तथा इसके अतिरिक्त बिहार, पश्चिम बंगाल, ओडिशा, छत्तीसगढ़ और बांग्लादेश के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग मिलता है। यह भाषा इंडो–आर्य भाषापरिवार से संबंधित है और अपनी विशिष्ट ध्वन्यात्मक संरचना के कारण स्वतंत्र पहचान रखती है। प्रस्तुत शोध का उद्देश्य खोरठा भाषा की प्रयोगात्मक ध्वनियों का वैज्ञानिक एवं विश्लेषणात्मक अध्ययन करना है, ताकि इसकी स्वर एवं व्यंजन–प्रणाली, उच्चारण–भेद, ध्वनि–परिवर्तन तथा स्वरागम जैसी प्रवृत्तियों को स्पष्ट किया जा सके। अध्ययन से ज्ञात होता है कि खोरठा में आठ मूल स्वरकृअ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ प्रचलित हैं। संयुक्त स्वर 'ऐ' और 'औ' का स्थानापन्न रूप क्रमशः 'अइ' और 'अउ/अव' के रूप में मिलता है। खोरठा की एक प्रमुख विशेषता स्वरागम है, जिसमें शब्दों के मध्य अथवा अंत में अतिरिक्त स्वर जुड़ जाता है, जैसे–'रात' का 'रइात' तथा 'जात' का 'जाइत'। यह प्रवृत्ति भाषा को विशिष्ट ध्वन्यात्मक लय प्रदान करती है। खोरठा में 'इ/ई' तथा 'उध्ऊ' ध्वनियाँ हिंदी की भाँति परिपूरक वितरण में नहीं हैं, बल्कि कई बार एक–दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त हो जाती हैं और अर्थ में विशेष परिवर्तन नहीं होता। अनुनासिक स्वरों का व्यापक प्रयोग भी इसकी प्रमुख विशेषता है। अधिकांश स्वरों के साथ अनुनासिकता पाई जाती है, जिससे भाषा की ध्वनि–व्यवस्था अधिक प्रभावपूर्ण बनती है। व्यंजन–प्रणाली की दृष्टि से खोरठा में लगभग 29 व्यंजन ध्वनियाँ मिलती हैं। उच्चारण–स्थान के आधार पर ये कंठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य तथा अंतःस्थ वर्गों में विभाजित हैं। हिंदी की अपेक्षा खोरठा में 'ऋ', 'ष', 'श', 'क्ष' और 'ज्ञ' का प्रयोग नहीं होता। इसके स्थान पर कुछ विशिष्ट महाप्राण रूप जैसे 'म्ह', 'ल्ह', 'न्ह', 'र्ह' प्रयुक्त होते हैं, जो इसकी ध्वन्यात्मक विशिष्टता को दर्शाते हैं। ध्वनि–परिवर्तन की दृष्टि से घोषीकरण एवं अघोषीकरण की प्रवृत्तियाँ भी देखने को मिलती हैं, जैसे 'भक्त' का 'भगत' तथा 'मदद' का 'मदत'। इससे स्पष्ट होता है कि खोरठा की ध्वन्यात्मक प्रणाली गतिशील एवं विकासशील है। अंततः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि खोरठा भाषा की प्रयोगात्मक ध्वनियाँ न केवल इसकी आंतरिक संरचना को स्पष्ट करती हैं, बल्कि इसे भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती हैं। इसकी ध्वनि–प्रणाली में निहित विविधता और लचीलापन इसे हिंदी से भिन्न और स्वतंत्र स्वरूप प्रदान करता है।

मुख्य शब्द

खोरठा भाषा, ध्वन्यात्मक संरचना, स्वरागम, अनुनासिकता, व्यंजन–प्रणाली, घोषीकरण.

खोरठा भाषा की स्वन–प्रक्रिया

खोरठा सदान समूह की भाषा है जो झारखंड क्षेत्र की एक प्रमुख लोक भाषा है। झारखंड के लगभग 16 से 18 जिलों के 1.5 करोड़ लोगों द्वारा बोली जाती है। यह केवल राज्य की प्रकृतिक संपदाओं से ही भरा–पुरा नहीं है, बल्कि इसकी भाषिक संपदा भी उल्लेखनीय है। इसके प्रमुख उपभाषाएँ हजारीबाग, चतरा, बोकारो, गिरिडीह, धनबाद, दुमका, देवघर आदि जिलों में बोली जाती हैं। यह भाषा इंडो–आर्य भाषा समूह से संबंधित है।

इसके अतिरिक्त तीन भाषा परिवार की भाषाओं का पढ़ना–पढ़ाना विश्वविद्यालय स्तर पर हो रहा है। इसके अलावा इस भाषा पर बंगला, उर्दू, मगही, भोजपुरी आदि भाषाओं की ध्वन्यात्मक संरचना एवं व्याकरणिक स्वरूप का प्रभाव भी देखा जा सकता है। खोरठा लोकभाषा है और इसकी अपनी मौलिक स्वरूप है जबकि अन्य भाषाओं के माध्यम भाषा अथवा अनुवाद भाषा के करीब मानी जाती है।

''बीहड़, जंगलों एवं पठारों में उत्पन्न होने के कारण ही खोरठा एवं नागपुरी सहित अन्य स्थान भाषाओं (कुरमाली और पंचपरगनिया) की ध्वनियाँ सरल एवं सटीक उच्चारित होने वाली हैं। इनमें वैदिक संस्कृति और खड़ी बोली हिंदी की कठिन ध्वनियां (ऋ,ढ़,श,ष) एवं संयुक्त ध्वनियां (ऐ,औ,क्ष,त्र,ज्ञ) का अभाव है।''[1]

खोरठा भाषा

एक परिचय के लेखक आनंद किशोर दांगी इसकी प्राचीनता एवं भाषिक समृद्धि की ओर संकेत करते हुए इसका संबंध प्राचीन लिपि खरोष्ठी से जोड़ते हैं – खोरठा भाषा झारखंडेक 15 जिलाक माइकोरबा भासा हकइ। इ भासाक आपन ढंग ढांचा मनेक एकर आपन स्वतंत्र बेआकरनिक विसेसता है। खोरठा भासाञ् जे ध्वनि परजोग करल जा हय प्रकृति ले जनमल बा बाढ़ल ध्वनि गुला हइ। एकर लसतंगा खरोष्ठी लिपी से जा हइ। खरोष्ठी लिपि 37 अक्षर परजोग कारल जा हल। खोरठा भासाञ् 37 अक्षर के परजोग करल जा हइ।[2]

खोरठा भाषा के भाषिक स्वरूप को बदलते हुए आगे लिखते हैं:

''ध्वनि सबद के आधार हवो हइ। बोली सबद ले बइन जा हइ आर सबद ध्वनि गुलाक मेसराइल से बइन जा हे।मनेक कोन्हो सबदेक कलपना ध्वनि बिना नाञ् करल जाइत। जखन कोन्हो ध्वनिक लिखेक,पढ़ेक खातिर परजोग करल जा हइ तखन उ ध्वनि अक्षर बा मातरा कहल जा हइ। दोसर रुपे आखर उ मूल हे जेकर बाट खुट नाञ् करल जाइ पारे। जइसे आ, क, ख आरो– आरो।''[3]

भाषा में व्यवहार होने वाली ध्वनियों के लिखित रूप को वर्ण कहते हैं।

''सभेक भासाक आपन –आपन लिपि हइ। मकिन खोरठाक लिखेक लाइ देवनागरी लिपि ले कटि समझौता आर सरत के दाइएं बाइएं करेक अपनाबल जा हे। कि ले कि खोरठा भासाक आपन लिपि नाञ् हे। जदि खोरठाक भासाक जनम खरोष्ठी लिपि प्राकृत संस्कृत भासाक लिखेक चलते भेल हे। मकिन आज लिपिक परजोग नाञ्। सइ लागिन खोरठाक उखराबेक लाइ नागरी लिपिक परजोग करल जा हे।''[4]

भाषा का स्वरूप स्वरों और व्यंजनों के सार्थक योग से बनता है।

चूँकि हिंदी और खोरठा आधुनिक आर्य भाषाओं की ही दो भाषाएं हैं और दोनों की धनात्मक संरचना और व्याकरणिक स्वरूप में काफी समानता है बावजूद इसके आंतरिक और बाह्य स्तर पर दोनों भाषाओं दो रूप में समादृत हैं। इन दोनों के बीच के अंतर को समझने के पूर्व खोरठा में स्वरों और व्यंजनों की स्थितियों को स्पष्ट करना समीचीन होगा:

खोरठा भाषा की स्वर ध्वनियों का वर्गीकरण

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए(अयध्अइ), ओ, (अउध्अव)।

ह्रस्व स्वरध् मूल स्वर– अ, इ, उ

ह्रस्व दीर्घ स्वर– ए, ओ (ए और ओ का प्रयोग खोरठा में दोनों रूपों में होता है।)

दीर्घ स्वर– आ, ई, ऊ

संयुक्त स्वर–ऐ (अइ,अय), औ(अउ, अव)

अर्द्ध स्वर– ऱ, व्

खोरठा में विभिन्न स्वरों की उच्चारण स्थिति

खोरठा मुख्यतः झारखंड में बोली जाने वाली भाषा है, लेकिन बिहार, पश्चिम बंगाल, उड़ीसा, छत्तीसगढ़ तथा बांग्लादेश के कुछ सीमावर्ती क्षेत्रों में भी इसका प्रयोग मिलता है। विभिन्न क्षेत्रों में बोली जाने के कारण इसके उच्चारण और शब्दों में थोड़ा–बहुत अंतर दिखाई देता है। खोरठा और परिष्कृत बंगला भाषा में कुछ ध्वन्यात्मक समानताएँ पाई जाती हैं। यही वजह है कि सीमावर्ती इलाकों में रहने वाले लोग एक–दूसरे की भाषा को आंशिक रूप से समझ लेते हैं, किंतु दूर–दराज के क्षेत्रों के खोरठा भाषियों के बीच आपसी समझ में कभी–कभी कठिनाई उत्पन्न हो जाती है।

ऐसी स्थिति में खोरठा भाषा के प्रमुख स्वरों तथा उनके उच्चारण–रूप को स्पष्ट करना आवश्यक हो जाता है, ताकि इसकी ध्वन्यात्मक संरचना को सही रूप में समझा जा सके।

अ का उच्चारण एवं प्रयोग

खोरठा भाषा में अ अर्द्ध विवृत्त मध्य स्वर ध्वनि है। इसका प्रयोग नागपुरी एवं हिंदी की तरह आदि, मध्य और अंत तीनों स्थान पर होता है। खोरठा भाषा में अ के उच्चारण में क्षेत्रीय विविधता साफ झलकती है। ''कई स्थानों पर इसका उच्चारण दीर्घ या किंचित लंबा सा होता है जो दो मात्राओं से भी बड़ा सुनाई देता है। मात्रा की लंबाई को सूचित करने के लिए खोरठा में अवग्रह (ऽ) चिन्ह का प्रयोग किया जाता है।''[5]

खोरठा में अ ध्वनि के इस दीर्घ रूप प्रयोग रामगढ़ में बहने वाली दामोदर नदी की पार नदियां खोरठा अर्थात हजारीबाग, चतरा जिले की भाषा में देखी जा सकती है। ऐसा मगही भाषा के प्रभाव के कारण है डॉक्टर बीपी केशरी ने 1984 ईध में खोरठा भाषा के मानकीकरण के उद्देश्य से आयोजित कार्यशाला में यह प्रस्ताव दिया था कि अ के दीर्घीकरण के स्वरूप को चिन्हित करने के लिए अवग्रह(ऽ) के स्थान पर मूल क्रिया और सहायक क्रिया के बीच हाइफन (–) का प्रयोग किया जाना चाहिए, यथाः

पढ़ऽहलइ – पढ़–हलइ
कांदऽहलइ– कांद–हलइ।

खोरठा के अधिकांश विद्वान ऐसा मानते हैं कि हाइफन के प्रयोग से अ ध्वनि का वास्तविक बोधन हो जाएगा और इसे प्रयोग में लाना जाना चाहिए, किंतु कुछ विद्वानों के अनुसार इससे खोरठा लेखन के निर्बाधता में बेवजह अवरोध की स्थिति पैदा होती है, और इसका पालन जरूरी नहीं है खोरठा भाषा में अ का उच्चारण वर्तुल रूप में भी देखने को मिलता है यह रूप पश्चिम बंगाल से सटे हुए क्षेत्र में अधिकांश मिलता है यथा मन का मोन चल का चोल वन का बोन। दामोदर नदी के उत्तर की खोरठा में एक विलक्षण प्रवृत्ति दिखाई पड़ती है खासकर सामान्य वर्तमान और सामान्य भूतकाल की क्रिया रूप बनाने में धातु के साथ यह वर्तुलाता दिखाई पड़ती है और अवग्रह चिन्ह लगाने से मुक्ति मिल जाती है।

यथा–
''करो हलइ – करऽहलइ– करता था
चलो हलइ– चलऽहलइ – चलता था
नाचो हइ – नाचऽहइ – नाचता है।''[6]

पश्चिम बंगाल की ओर बढ़ते ही खोरठा में अ ध्वनि की वर्तुलता बढ़ती चली जाती है अरविंद कुमार के अनुसार खोरठाभाषा के ष् तीर्थक्षरी के अंतिम स्वर दीर्घ हो तो बीच के वर्ण में युक्त ''अश् का उच्चारण अपूर्ण होता है। यथा नक्शा, मंगरा लम्बा, चुक्नी खोर्ठा ,छग्री, लंग्री आदि लेकिन लिखा पूरा जाता है।''[7] फिर आगे लिखते हैं– ''चार अक्षरों के बने (अकरांत) शब्दों के दूसरे वर्ण में युक्त ''अ'' का अपूर्ण उच्चारण होता है। यथा – हद्कल, कल्छूर, कनफट्टी।''[8] आधुनिक आर्य भाषाओं की तरह खोरठा में भी स्वरांत में अ का लोप हो रहा है। यथा– जाइत्, धरम्, करम्, आदि।

श् का उच्चारण एवं प्रयोग

खोरठा भाषा में ''आ'' एक विवृत्त पश्चस्वर है। आ का उच्चारण हिंदी की भांति दीर्घ होता है। यथा– आधा, लेदरा, चेथरा, आदि। ''न् या म् से युक्त अक्षरों के शब्द आदि आकारांत हो तो पूर्व का अक्षर हस्व होने पर भी विकल्प से दीर्घ उच्चरित होता है।''[9] जैसे लंबा का लांबा, लंगटा का लांगटा। ''इसके अलावे भी अकारांत शब्दों के पूर्व अक्षर के अ स्वर का उच्चारण आ पाया जाता है।''[10] जैसे

हमर – हामर

अपन – आपन आदि।

ए एवं ई का उच्चारण एवं प्रयोग

एक संवृत ह्स्व स्वर है जबकि ई एक संवृत्त दीर्घ अग्र स्वर है। ''खोरठा इन नागपुरी में ऐसा उच्चारण आक्षरिक एवं मात्रिक दोनों रूपों में होता है। दोनों रूपों में यह अलग–अलग प्रदर्शित करता है। आक्षरिक रूप में यह अति ह्स्व अर्थात् फुसफुसाहट की तरह होता है। यथा – जरिया, तहिया, सिकार, तनि, करिआ, पिपरी आदि।''[11]

खोरठा एवं नागपुरी दोनों में ई का प्रयोग आक्षरिक और मात्रिक दोनों रूपों में होता है। यथा– ई सब, ऊ सब। खोरठा में कहाँ इ और कहाँ ई का प्रयोग होगा, इसका निर्धारण उच्चारण की रीति एवं स्वराघात पर निर्भर करता है। यथा– आउ और आऊ, जाउ और जाऊ, करु और करू ये दोनों रूप खोरठा में प्रचलित है। यह स्वराघात आदर देने, आदेश देने आदि पर निर्भर करता है।

उ एवं ऊ का उच्चारण एवं प्रयोग

उ एक संवृत्त ह्स्व पाश्च–स्वर है, जबकि ऊ संवृत्त दीर्घ स्वर है। दोनों का उच्चारण आक्षरिक एवं मात्रिक दोनों रूपों में होता है। उ का उच्चारण ''आक्षरिक रूप में अति ह्स्व स्वर एवं मात्रिक रूप में पूर्ण ह्स्व होता है।''[12] यथा– उजर, उघरल, छउआ, सुघरिन, कुटना आदि। ऊ स्वर का उच्चारण भी आक्षरिक एवं मात्रिक दोनों रूपों में होता है। यथा– दूगो, भूंजा, ऊ सब आदि। ध्यातव्य है कि खोरठा और नागपुरी दोनों में ह्स्व स्वर की मात्रा की अधिकता होती है। दोनो भाषाओं में ह्स्व या दीर्घ का निर्धारण स्वराघात पर निर्भर करता है और यह स्वराघात बोलने वाले की रीति पर निर्भर करता है।

ए और ओ का उच्चारण एवं प्रयोग

खोरठा में ए एवं ओ दोनों का उच्चारण ह्स्व एवं दीर्घ दोनों रूपों में होता है। उदाहरण के लिए एग, एक, एकर (इकर), देख, गेल आदि शब्द का ए दीर्घ है किंतु जाएक, खाएक में ए ह्स्व हो जाता है। इसी प्रकार डोर, माधो, मोंढ़ा आदि शब्दों का ओ दीर्घ है जबकि ओहे, मोके, तोक, तोञ आदि शब्दों का ओ ह्स्व है। खोरठा में संयुक्त स्वर के रूप में अयध्अइ और अउध्अव प्रचलन भी खूब देखने को मिलता है। अरविंद कुमार के अनुसार ''ऐ और औ ध्वनि खोरठा उच्चारण में अइ और अउ के काफी नजदीक है, न कि अय अव की।''[13] जैसा– हिंदी– मैदा– खोरठा– मयदा, हिंदी–सैतान, खोरठा–सइतान, आदि। ध्यातव्य है कि खोरठा क्रियारूपों में युक्त 'ऐ' ध्वनि 'अइ' ही उच्चारित होती है, यथा– खइलइ, देखलइ आदि।

स्वरों की अनुनासिकता

खोरठा में अइ और अउ संयुक्त स्वरों को छोड़कर सभी स्वरों के साथ अनुनासिक ध्वनियों का प्रयोग होता है। यथाः

अँ– अँगरा, मँगरा, पँजरा, बाँधो

आँ– आँइख, पाँइख,

इँ– इँजोर, मइँयाध् मइँआ

उ– उँचकल, पहुँचलध् पोहँचल

ऊ– ऊँच, खूँटा, भूँइआध् भुँइया

एँ– रइहें, खइहें

आँ– भोंभा, खाँखी

खोरठा में अनुस्वार के स्थान पर पंचमाक्षर का प्रयागे भी मिलता है, यथा– झांझर– झाञ्झर, लंबा– लाम्बा, करंज– करञ्ज आदि। टंकण की सुविधा को देखते हुए अब खोरठा में भी अनुस्वार का प्रचलन बढ़ रहा है। समासतः कहा जा सकता है कि खोरठा में मूलतः आठ स्वर हैं किंतु इनका संयुक्त रूप भी प्रयुक्त होता है। वैदिक संस्कृत में 'ऋ' स्वर का ह्रस्व और दीर्घ दोनों रूपों में प्रयुक्त होता था। हिंदी में 'ऋ' स्वर का प्रयोग आक्षरिक और मात्रिक दोनों रूपों में होता है। इस स्वर की मात्रा के रूप (ृ) ध्वनि चिह्न का प्रयोग होता है। खोरठा में 'ऋ' को स्वर के रूप में मान्यता प्राप्त नहीं है। खोरठा में ऋ स्वर का प्रयोग नहीं होता है, (दिनेश दिनमणि– वस्तुतः स्वर है ही नहीं)। पुनः खोरठा में 'ऐ' और 'औ' का उच्चारण प्रचलन में नहीं है। अतः खोरठा के स्वर–समूह में इनकी गणना नहीं है। खोरठा की स्वनिम प्रक्रिया हिंदी से थोड़ी भिन्न है। ''हिंदी में इ, ई, उ, ऊ एक ही स्वन के दो उपस्वन (Allophone) हैं, क्योंकि ये परिपूरक वितरण (Complementry Distribution) में आते हैं, अर्थात् एक दूसरे के विरोध आपस में नहीं हैं। अर्थात एक के स्थान पर एक दूसरे का प्रयोग नहीं होता। यदि कोई करता है तो अनर्थ हो जाता है। जैसे– दिन (दिवस), दीन(गरीब), चिर (चीरना), चीर (वस्त्र)। परंतु खोरठा में ये ध्वनियाँ परिपूरक वितरण में न होने के कारण ये उपस्वन न होकर स्वनिम हैं और दोनों के एक दूसरे के विरोधी हैं। अर्थात इ, ई, उ, ऊ इनमें से कोई भी किसी का स्थान ले सकता है। इससे अर्थ में कोई फर्क नहीं पड़ता। किंतु आम तौर पर खोरठा में 'ई' का प्रयोग नहीं के बराबर होता है। ह्रस्व 'इ' और 'उ' की ही प्रधानता है। 'ई और ऊ वर्णों का प्रयोग क्रमशः निकटवर्ती और दूरवर्ती सर्वनाम के लिए होता है।''14 इसी प्रकार खोरठा में हिंदी के ऋ, ऐ और औ ध्वनियाँ का प्रयोग नहीं होता है। खोरठा भाषा में इन ध्वनियों का स्थानापन्न किन रूपों में होता है, यह उल्लेखनीय होगाः

(क) खोरठा में 'ए' के स्थान पर अइ का प्रयोग होता है। जैसे पैसा को 'पइसा', खैर को 'खइर', दाल को 'दाइल', मैदा को 'मइदा' उच्चरित किया जाता है और इन्हीं रूपों में लिखा जाता है।

(ख) खोरठा में हिंदी की औ ध्वनि के स्थान पर उसके संयुक्त रूप 'अउ' का व्यवहार होता है। इस तरह हिंदी के निम्न शब्दों का व्यवहार खोरठा में इन रूपों में होता हैः

कौआ– कउवा

औजार– अउजार

दौड़– दउड़

जौ– जउ

(ग) खोरठा में 'ऋ' ध्वनि का प्रचलन नहीं है। वहाँ हिंदी की ऋ ध्वनि के स्थान पर 'रि' या 'री' प्रयोग होता हैः

ऋण– रीन

ऋतु– रितु ऋषि– रीसी

(घ) खोरठा में पहले अवग्रह (ऽ) चिह्न का प्रयोग होता था ''किंतु 1984 ई. में जनजातीय भाषा–विभाग द्वारा आयोजित भाषा मानकीकरण कार्यशाला में अवग्रह चिह्न को हटाकर ('अपोस्ट्रोफी) को प्रयोग में लाने का प्रस्ताव डॉ. बी. पी. केशरी द्वारा लाया गया और स्वीकृत भी हुआ, किंतु कुछेक को छोड़कर लोग प्रयोग नहीं करते।''15 वर्तमान समय में मूल क्रिया और सहायक क्रिया के बीच में हइफन (–) का प्रयोग कर या मूल क्रिया में 'ओ' (ो) कार डालकर सही रूप बनाया जाता हैः

जैसेः पहले अब

बोलऽ हलइ। बोलो हलइध्बोल–हलइ।

चलऽ हलइ। चलो हलइध्चल–हलइ। आदि–आदि।

(ड़) खोरठा में इ और उ ध्वनियों का प्रयोग तीन रूपों में होता है–

जैसेः इलचि, इँचर, इँटक, इँजोर

उटका, उसट, उपर, उँड़रेक, आदि–आदि।

(च) खोरठा सहित सभी सदानी भाषाओं में स्वरागम की प्रवृत्ति बहुतायतता के साथ देखी जाती है। यह स्वरागम इ और उ दोनों ध्वनियों के रूप में होता है। ''सदानी भाषाओं में मध्य स्वरागम या अपहिनित की प्रवृत्ति विलक्षण है। किंतु खोरठा में यह प्रवृत्ति सघन है, किंतु नागपुरी, कुरमाली, पंचपरगनिया में विरल।''16 मध्य–स्वरागम के कुछ उदाहरण खोरठा भाषा में देखे जा सकते हैं–

मध्य–स्वरागम रात– राइत

जात– जाइत

चाल– चाइल

सुत– सुइत

मधु– मउध।

खोरठा में मध्य–स्वरागम या अपहिनित की प्रवृत्ति के मूल कारण की पड़ताल करते हुए बी. एन. ओहदार यह तर्क देते हैं कि– ''मेरे विचार से संस्कृत प्राकृत के शब्द जब खरोष्ठी में लिखे जाते रहे होंगे तब यह प्रवृत्ति विकसित हो गई होगी, क्योंकि खरोष्ठी लिपि में मात्राओं की व्यवस्था न होने के कारण उनके स्थान पर स्वरों को ही लिखकर काम चलाया जाता रहा होगा। फलस्वरूप शब्द मध्य में इ, उ का आगम हो जाता रहा होगा। यह प्रवृत्ति आज तक बनी हुई है।''[17] ओहदार जी के मत से सहमत हुआ जा सकता है, किंतु ध्यान देने वाली बात यह भी है कि कर, नल, चल जैसे शब्दों के आदि में कोई मात्रात्मक चिह्न न होने के कारण भी इ का मध्य–स्वरागम हुआ है, यथा– कर– कइर, चल– चइल आदि।

(छ) खोरठा में अंत्य स्वरागम भी इ और उ के रूप में होता है। ''शब्द के अंत में इ तथा उ का प्रयोग, क्रमशः तृतीय एवं द्वितीय पुरुष एकवचन के बोधक प्रत्यय के रूप में क्रियारूपों में लगता है।''[18] जैसेः

क्रियारूपों में अंत्य स्वरागम–

ऊ ओकरा देखलइ

ऊ तोरा देखलउ।

सार्वनामिक विशेषण के रूप में– ई एकर हकइ

ऊ ओकर नाञ् हकइ।

(ज) खोरठा में अनुस्वार (।) एवं चंद्रबिंदु का व्यवहार हिंदी के अनुरूप ही होता है, सिर्फ स्वरागम हो जाता है, जैसेः

हिंदी	खोरठा
आँख	आँइख
आँगन	अइँगना
छाँह	छाहँइर
मंत्र	मंतर। आदि।

(ज) खोरठा में चंद्र (ँ) या अर्द्ध चंद्र का व्यवहार सामान्य रूप से नहीं होता है।

खोरठा भाषा में व्यंजन–ध्वनियों का वर्गीकरण

उच्चारण के आधार पर खोरठा एवं हिंदी भाषा की ध्वनियों की स्थिति लगभग समान है, तथापि दोनों भाषाओं के ध्वन्यात्मक स्वरूप में कई जगहों पर सूक्ष्म अंतर भी दृष्टिगोचर होते हैं। इन अंतरों को समझने के पूर्व विभिन्न स्तर पर किए गए खोरठा व्यंजनों के वर्गीकरण के स्वरूप को समझना होगाः

उच्चारण के स्तर पर व्यंजन ध्वनियों का वर्गीकरणः

1 कण्ठ्य– क, ख, ग, घ,

2 तालव्य– च, छ, ज, झ, ञ,

3 मूर्धण्य– ट, ठ, ड, ढ, (ड़, ढ़)

4 दन्त्य– त, थ, द, ध, न् स

5 ओष्ठ्य– प, फ, ब, भ, म

6 अंतस्थ य, र, ल् व

इस प्रकार खोरठा में व्यंजन ध्वनियों की संख्या 29 और स्वरों की संख्या 8 है। इन दोनों को मिलाकर कुल ध्वनियों की संख्या जोड़ देने पर यह 37 हो जाती है। प्राचीन लिपि खरोष्ठी में भी लिपियों की संख्या 37 ही थी। आधुनिक हिंदी में दो और द्विगुण (ड़ और ढ़) ध्वनियाँ जुटीं। आधुनिक खोरठा में भी ऐसा ही हुआ। किसी भी भाषा की जीवंतता का यह सामान्य लक्षण माना जा सकता है। इस प्रकार खोरठा में भी वर्तमान में दो द्विगुण ध्वनियों ड़ और ढ़ को जोड़कर 39 हो जाती है। यदि हम हिंदी और खोरठा में व्यंजन–वर्णो की व्यवस्था पर गौर करें तो पाएँगे कि खोरठा में 'ड.', 'ण', 'श', 'ष', 'क्ष', 'त्र' और 'ज्ञ' का व्यवहार नहीं होता है। दूसरी ओर खोरठा में कहीं–कहीं 'म्ह', 'ल्ह', 'न्ह'का व्यवहार होता है जबकि हिंदी में इनके महाप्राणीकरण के रूप यथा– म, न, र, ल का प्रचलन ही देखा जाता है। ''खोरठा की विशिष्ट ध्वनियाँ म्ह, ल्ह, न्ह, र्ह हैं। ये क्रमशः म, न, र, ल, के महाप्राणीकृत रूप हैं।''[19] खोरठा भाषा में कृष्णदास 'आला' द्वारा रचित एक व्याकरण पुस्तक है– खरठा भाखा गर्हन। यहाँ गर्हन शब्द में र्ह ध्वनि का र्प्रयोग हुआ है, यह खोरठा भाषा की निजी विशेषता है। हिंदी में इस प्रकार के उदाहरण नहीं मिलते हैं।

प्राणत्व के आधार पर खोरठा ध्वनियों का वर्गीकरणः

अल्पप्राण– क, ग, च, ज, ञ, ट, ड, ड़,
त, द, न, प, ब, म, य, र, ल, व और सभी स्वर

महाप्राण–ख, घ, छ, झ, ठ, ढ, ढ़, थ, ध, न (न्ह), फ, भ, म (म्ह), र्ह, ल्ह, स, ह

अघोष वर्ण– क, ख, च, छ, ट, ठ, त, थ, प, फ, स

घोष वर्ण– ग, घ, ज, झ, ञ, ड, ढ, ढ़, द, ध, न, (न्ह), ब, भ, म, (म्ह), य, र, ल, व, श

खोरठा भाषा में घोषीकरण एवं अघोषीकरण के आधार पर ध्वनि–परिवर्तन के कई उदाहरण मिलते हैं। इसके कुछ उदाहरण देखे जा सकते हैं। क अघोष वर्ण है, किंतु हिंदी के 'भक्त' से खोरठा के 'भगत' में के रूप में क् ध्वनि का घोषीकरण 'ग' के रूप में हुआ है। 'मदद' से 'मदइत' में द घोष का त के रूप में अघोषीकरण हुआ है। सख्त शब्द का सकत के रूप में ख महाप्राण का क अल्प महाप्राणीकरण हुआ है। पेड़ शब्द का फेड़ में प अल्पप्राण का फ महाप्राणीकरण में ध्वनि परिवर्तन हुआ है।

निष्कर्ष

खोरठा भाषा की प्रयोगात्मक ध्वनियों का अध्ययन स्पष्ट करता है कि इसकी ध्वन्यात्मक संरचना समृद्ध, जीवंत और विशिष्ट है। स्वर–प्रणाली में लचीलापन, स्वरागम की प्रवृत्ति, अनुनासिकता की व्यापकता तथा महाप्राण–रूपों की उपस्थिति इसे हिंदी से अलग पहचान देती है।

यह भाषा न केवल लोक–संस्कृति की संवाहक है, बल्कि अपनी स्वतंत्र ध्वन्यात्मक प्रणाली के कारण भाषावैज्ञानिक अध्ययन के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है।

संदर्भ सूची

1. कुमार, अरविंद (2014) *खारेठा एवं नागपुरी का तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक अध्ययन,* झारखंड झरोखा, रॉची, पृ. 116।
2. दाँगी, आनंदकिशोर (2015) *खोरठा भाषाः एक अध्ययन,* स्प्रर्द्धा प्रकाशन, जमशेदपुर, पृ. 27।
3. वही, पृ. 27।
4. वही, पृ. 27।
5. वर्णवाल, आजाद प्रसाद (2023) *खोरठा भाषा और साहित्यः एक अध्ययन,* उड़ान पब्लिकेशंस, राची, पृ. 31।
6. वही, पृ. 31–32।
7. कुमार, अरविंद (2014) *खोरठा एवं नागपुरी का तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक अध्ययन,* झारखंड झरोखा, रॉची, पृ. 118।
8. वही, पृ. 118।
9. नवरंगी, पीटरशांति (1995) *नागपुरिया सदानी बोली का व्याकरण,* झारखंड झरोखा, रॉची, पृ. 25।
10. झा, ए. के. (1985) *खोरठा सहित सदानिक बेयाकरण,* झारखंड झरोखा, रॉची, पृ. 3।
11. कुमार, अरविंद (2014) *खोरठा एवं नागपुरी का तुलनात्मक भाषावैज्ञानिक अध्ययन,* झारखंड झरोखा, रॉची, पृ. 119।
12. वही, पृ. 119।
13. वही, पृ. 121।
14. ओहदार, बी. एन. (2017) *खोरठा भाषा एवं साहित्यः उद्‌भव और विकास,* मार्गदर्शन पब्लिकेशन, रॉची, पृ. 55।
15. वर्णवाल, आजाद प्रसाद (2023) *खोरठा भाषा और साहित्यः एक अध्ययन,* उड़ान पब्लिकेशन, राँची, पृ. 31।
16. ओहदार, बी. एन. (2017) *खोरठा भाषा एवं साहित्यः उद्‌भव और विकास,* मार्गदर्शन प्रकाशन, रॉची, पृ. 60।
17. वही, पृ. 61।
18. दिनमणि, दिनेश (2022) *खाँटी खोरठा,* शिवांगन पब्लिकेशन, रॉची, पृ. 207।
19. वही, पृ. 207।

––==00==––